International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 04(II), October - December, 2024, pp. 57-63

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्यिक जीवन के अंश

धनेश शर्मा*
डॉ. पूनम लता मिड्ढा**

सार

निराला का जन्म बंगाल में मेदिनीपुर जिले के महिषादल गाँव में हुआ था। उनका पितृग्राम उत्तर प्रदेश का गढ़कोला (उन्नाव) है। उनके बचपन का नाम सूर्य कुमार था। बहुत छोटी आयु में ही उनकी माँ का निधन हो गया। निराला की विधिवत स्कूली शिक्षा नवीं कक्षा तक ही हुई। पत्नी की प्रेरणा से निराला की साहित्य और संगीत में रुचि पैदा हुई। सन् 1918 में उनकी पत्नी का देहांत हो गया और उसके बाद पिता, चाचा, चचेरे भाई एक–एक कर सब चल बसे।'एक सच्चा कलाकार अपने युग अभाव की आंधियों के गर्भ से जन्मता है, विषय परिस्थितियों की गोद में पलता है और काल की कठोर छाती पर अपनी जीवन यात्रा के अमिट लेख खोदकर मरता है। यहाँ उपर्युक्त पंक्तियाँ निराला के यशस्वी गाथा का चित्रांकन हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं, जिसे पढ़ने मात्र से किसी भी पाठक के मानस पटल पर निराला के व्यक्तित्व की स्मृतियाँ अनायास ही उभर आती हैं। लेकिन यहाँ पर निराला के स्मृति मात्र को प्रस्तुत करना मेरा ध्येय नहीं है वरन् उनके विराट आकृति को प्रस्तुत करना है। जिससे निराला अपने सम्पूर्ण जीवन वृत्त के साथ हमारे समक्ष उपस्थित हों ।

शब्दकोशः *साहित्यिक जीवन, पितृग्राम, स्मृतियाँ, स्कूली शिक्षा, मानस पटल।*

प्रस्तावना

निराला का जन्म बंगाल में मेदिनीपुर जिले के महिषादल गाँव में हुआ था। उनका पितृग्राम उत्तर प्रदेश का गढ़कोला (उन्नाव) है। उनके बचपन का नाम सूर्य कुमार था। बहुत छोटी आयु में ही उनकी माँ का निधन हो गया। निराला की विधिवत स्कूली शिक्षा नवीं कक्षा तक ही हुई। पत्नी की प्रेरणा से निराला की साहित्य और संगीत में रुचि पैदा हुई। सन् 1918 में उनकी पत्नी का देहांत हो गया और उसके बाद पिता, चाचा, चचेरे भाई एक–एक कर सब चल बसे। अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने निराला को भीतर तक झकझोर दिया। अपने जीवन में निराला ने मृत्यु का जैसा साक्षात्कार किया था उसकी अभिव्यक्ति उनकी कई कविताओं में दिखाई देती है।

सन् 1916 में उन्होंने प्रसिद्ध कविता जूही की कली लिखी । जिससे बाद में उनको बहुत प्रसिद्धि मिली और वे मुक्त छंद के प्रवर्तक भी माने गए। निराला सन् 1922 में रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित पत्रिका समन्वय

* शोधार्थी, हिन्दी विभाग निर्वाण विश्वविधालय, राजस्थान।
** प्रोफेसर, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।

के संपादन से जुड़े। सन् 1923–24 में वे मतवाला के संपादक मंडल में शामिल हुए। वे जीवनभर पारिवारिक और आर्थिक कष्टों से जूझते रहे। अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण निराला कहीं टिककर काम नहीं कर पाए। अंत में इलाहाबाद आकर रहे और वहीं उनका देहांत हुआ।

निराला का उपन्यास और शास्त्रीय हिंदी कथा

निराला के कथा साहित्य में जातीय चेतना के अध्ययन के पूर्व आवश्यक है कि हम हिन्दी में उपन्यास के लेखन की परम्परा का परिचय प्राप्त करें। हिन्दी उपन्यास की मूल चेतना के साथ निराला की चेतना को मिलाकर देखें कि निराला का अपनी परम्परा से क्या संबंध है।

19वीं शताब्दी से हिन्दी उपन्यासों में जिस नयी चेतना का विकास हुआ है, उस चेतना का संवाहक गद्य है। हिन्दी साहित्य में उपन्यास का विकास गद्य के विकास के साथ जुड़ा हुआ हैं । यह धारणा है कि हिन्दी उपन्यासों के उद्‌भव और विकास में विदेशी उपन्यासों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विदेशों में भी यही माना जाता है कि '' उपन्यास विश्व की कल्पना प्रसूत संस्कृति को बुर्जुआ अथवा पूँजीवादी सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण देन है। उपन्यास उसकी एक महान साहसपूर्ण खोज है। 'मानव की उसके द्वारा खोज है। '' रॉल्फ फॉक्स ने यहाँ तक कहा है कि उपन्यास हमारे आधुनिक, बुर्जुआ समाज का महाकाव्य है । कला के इस रूप ने अपना पूर्णतम विकास इस समाज की यौवनावस्था में प्राप्त किया, और ऐसा लगता है कि हमारे समय में बुर्जुआ समाज के ह्रास ने उसे भी ग्रस लिया है।

श्रद्धाराम फुल्लौरी, लाला श्री निवास दास, बालकृष्ण भट्ट, लज्जाराम मेहता पहले प्रकार के लेखक थे तो गोपालराम गहमरी और किशोरीलाल गोस्वामी दूसरे तरह के थे। इनके उपन्यासों की विषयवस्तु का विश्लेषण किया जाय तो इनमें आदर्श हिन्दू, आदर्श गृहिणी एवं चारित्रिक शुचिता आदि पर विशेष बल दिया गया एवं जुआ, मद्यपान, कुसंगति आदि को दूर करने का उपदेश । श्री निवास दास का 'परीक्षागुरु' बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान न एक सुजान, लोचन प्रसाद पाण्डेय का दो मित्र, लज्जाराम शर्मा का आदर्श दम्पति, बिगड़े का सुधार, गोपालराम गहमरी का नये बाबू, डबल बीबी, सास– पतोहू आदि उपर्युक्त प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि उपन्यास हैं। इन सामाजिक उपन्यासों के साथ–साथ कुछ उपन्यास प्रेम और रोमांस पर भी लिखे गये हैं जैसे किशोरी लाल गोस्वामी का अंगूठी का नगीना, ठाकुर जगमोहन सिंह का श्यामा– स्वप्न आदि। आरम्भिक काल के सबसे प्रसिद्ध उपन्यासकार किशोरीलाल गोस्वामी हैं। ये सनातनी परम्परा के मानने वाले उपन्यासकार हैं। इनके उपन्यासों में 'लीलावती', 'आदर्शसती', 'राजकुमारी, चपला' व 'नव्य समाज' आदि में स्त्री समस्या का चित्रण है, जिनमें सती साध्वी देवियों का आदर्श प्रेम, साली – बहनोई का अवैध प्रेम, वेश्याओं का कुत्सित जीवन तथा विधवाओं का व्यभिचार वर्णित है। उन दिनों समाज में जो नये परिवर्तन हो रहे थे, वह इन्हें पसन्द नहीं थे । आधुनिक साहित्य के द्वितीय उत्थान काल में मौलिक उपन्यासों के साथ–साथ अनूदित उपन्यास भी धड़ल्ले से निकले। इसमें उर्दू और अंग्रेजी के भी कुछ अनुवाद थे। जैसे 'ठगवृत्तान्तमाला', 'पुलिसवृत्तान्तमाला' आदि। द्वितीय उत्थान में गोपालराम गहमरी ने बंगभाषा के गार्हस्थ्य उपन्यासों का अनुवाद किया। इन उपन्यासों के अलावा बँगला लेखकों में बंकिमचन्द्र, रमेशचन्द्र दत्त, चण्डीचरण सेन की पुस्तकों के भी अनुवाद हुए। रवीन्द्रनाथ की पुस्तक 'आँख की किरकिरी' का अनुवाद भी किया गया। बँगला के अलावा मराठी और गुजराती से भी कुछ अनुवाद हुए। अंग्रेजी के भी दो–चार अनूदित उपन्यास छपे ।

'टाम काका की कुटिया', 'लंदन रहस्य' उल्लेखनीय हैं। आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि पहले मौलिक उपन्यास लेखक काशी के देवकीनन्दन खत्री थे। इनके ऐयारी के उपन्यासों में 'चन्द्रकान्ता' और 'चन्द्रकान्ता सन्तति' की चर्चा चारों ओर इतनी फैली कि जो लोग हिन्दी की किताबों को नहीं पढ़ते थे वे भी इन नामों से परिचित हो गये । शुक्ल जी के अनुसार ये साहित्य कोटि में नहीं आते हैं। हिन्दी उपन्यासों के इतिहास में यह काल तिलस्मी – ऐय्यारी नाम से जाना जाता है। इस समय के दूसरे मौलिक उपन्यासकार किशोरी लाल गोस्वामी थे, जिनकी रचनाएं साहित्य कोटि में आती हैं। इनमें समाज का सजीव चित्र तथा पात्रों का चरित्र–चित्रण भी पाया जाता है। इस काल में साहित्य की दृष्टि से पहला उपन्यासकार किशोरीलाल गोस्वामी

को ही कहना चाहिए। जासूसी उपन्यासकारों में सबसे अधिक सफलता गोपालराम गहमरी को मिली थी। इस तरह के उपन्यास इंग्लैण्ड की देन हैं। गहमरी 'जासूस' नामक मासिक पत्र भी निकालते थे। जिसमें इनके बहुत से जासूसी उपन्यास छपे हैं। इस युग में ऐतिहासिक उपन्यास भी हिन्दी में छपे जिनमें कुछ अनुदित हैं तो कुछ मौलिक । इतिहास में जिस काल विशेष पर उपन्यास लिखे गये वह मध्यकालीन भारत का मुगल शासन काल था । ऐतिहासिक उपन्यासकारों में किशोरी लाल गोस्वामी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है । सुल्ताना रजिया बेगम या रंगमहल में हलाहल, लखनऊ की कब्र या शाही महलसरा इसके अलावा गंगा प्रसाद का 'नूरजहाँ, मथुरा प्रसाद शर्मा का नूरजहाँ बेगम, बृजनन्दन सहाय का 'लालचीन' इतिहास पर आधारित उपन्यास लिखे गये किन्तु इन्हें सच्चे अर्थों में ऐतिहासिक उपन्यास नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि इनमें ऐतिहासिकता का अभाव है। ये उपन्यास ऐतिहासिक रोमांस का वर्णन करते दिखाई पड़ते हैं । इस काल में कुछ ऐसे उपन्यास भी हैं जो भावप्रधान उपन्यास कहे जाते हैं। शुक्ल जी का कहना है कि– ''ये काव्य कोटि में आने वाले भावप्रधान उपन्यास हैं। इनमें कथा तत्व बहुत ही क्षीण है और गति का अभाव भी है। ''

निराला संक्षिप्त जीवन वृत्त

'एक सच्चा कलाकार अपने युग अभाव की आंधियों के गर्भ से जन्मता है, विषय परिस्थितियों की गोद में पलता है और काल की कठोर छाती पर अपनी जीवन यात्रा के अमिट लेख खोदकर मरता है। यहाँ उपर्युक्त पंक्तियाँ निराला के यशस्वी गाथा का चित्रांकन हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं, जिसे पढ़ने मात्र से किसी भी पाठक के मानस पटल पर निराला के व्यक्तित्व की स्मृतियाँ अनायास ही उभर आती हैं। लेकिन यहाँ पर निराला के स्मृति मात्र को प्रस्तुत करना मेरा ध्येय नहीं है वरन् उनके विराट आकृति को प्रस्तुत करना है। जिससे निराला अपने सम्पूर्ण जीवन वृत्त के साथ हमारे समक्ष उपस्थित हों । अतः यहाँ पर उनका यथा – क्रम विवरण प्रस्तुत है ।

छायावाद के स्तम्भ एवं समर्थ विश्लेषक महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के जीवन के विषय में ऐसा कहा जाता है कि वह बेहद आकर्षक, रोचक एवं वैविध्यपूर्ण रहा है। वैसे तो किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण में उसके जीवन की आरंभिक घटनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं ।

'निराला' की जीवन दृष्टि

इस विषय की गहराइयों में प्रवेश करने से पूर्व हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि जीवन दृष्टि ऐसे शब्द की निर्मिति के पीछे उत्तरदायी कारक कौन–कौन से हैं ? क्या यह जीवन मात्र मानव केन्द्रित है ? वरन् समूचे मानव समाज को अपने अन्दर समाहित किये हुए है। तो इस प्रश्न के विश्लेषण क्रम में सर्वप्रथम यही कहा जा सकता है कि किसी भी साहित्यकार के जीवन दृष्टि को निर्धारित करने वाले कारकों में वह समूचा संसार समाहित होता है, जिनसे साहित्यकार का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध स्थापित होता है। क्योंकि कोई भी साहित्यकार अपने युग, समाज और परिस्थितियों की ही उपज होता है तथा अपनी विषयवस्तु के रुप में स्त्रोत सामग्री समाज के भीतर से ही ग्रहण करता है। हाँ, यह बात अलग है कि कोई भी साहित्य कोरा यथार्थ नहीं होता वरन् उसमें कमोवेश रूप में कल्पना का पुट भी निहित होता है, फिर चाहे वह साहित्यकार का स्वयं का विचार हो या फिर उसका आदर्शवाद।

निराला की साहित्यिक चेतना

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने जब साहित्य में पदार्पण किया तो वह समय कलात्मक उत्कर्ष का न होकर वरन् अभावों की पूर्ति का था । ऐसे में द्विवेदी जी ने अपनी चतुर्मुखी प्रतिभा के द्वारा इन अभावों को विविध क्षेत्रों – इतिहास, अर्थशास्त्र, विज्ञान, पुरातत्व, चिकित्सा, राजनीति, जीवनी, आदि से सामग्री लेकर हिन्दी के अभावों की पूर्ति की । इन्होंने गद्य को माँजने – सँवारने और परिष्कृत करने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। हिन्दी गद्य और पद्य की भाषा एक करने हेतु भी आपने सद्प्रयास किया। ऐसे में अगर आपके साहित्यिक मूल्यों की बात करें तो एक निबंधकार के रूप में आपने सदैव इस बात का ख्याल रखा कि पाठकों का इससे ज्ञानवर्द्धन हो। इसी के साथ वैविध्य, सरलता और उपदेशात्मकता आपके निबन्धों की प्रधान प्रवृत्ति थी ।

आपने काव्य के क्षेत्र में रीति के स्थान पर उसकी उपादेयता, लोकहित, उद्देश्य की गम्भीरता, शैली की नवीनता और निर्दोषता को काव्य कसौटी के रूप में प्रतिष्ठित किया । आलोचना के रूप में पाठक समुदाय के रूचियों का परिष्कार किया ।

निराला साहित्य की पृष्ठभूमि

हिंदी में जिस कालखण्ड को छायावाद के नाम से जाना जाता है वह देश के राष्ट्रीय सामाजिक पटल पर अत्यंत तीव्र गतिविधियों का समय था। स्वाधीनता आंदोलन इस समय अपने प्रखर रूप में सक्रिय था । भारतीय जनमानस न केवल अंग्रेजों की राजनीतिक दासता से मुक्त होना चाहता था वरन उनके आर्थिक–सांस्कृतिक वर्चस्व को भी पलट कर अपनी अस्मिता की पहचानने और अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने. के लिए कटिबद्ध था। उन्नीसवीं शताब्दी में देश में पुनर्जागरण की जो चेतना पनपी थी बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक तक आते–आते वह जन–जन में व्याप्त हो गई थी। अपनी शक्ति को पहचानते हुए उसे सम्पन्न करने और अन्याय, अत्याचार, दमन तथा दासता के विरोध का प्रयत्न हर तरफ दिखाई देता था। साहित्य के क्षेत्र में भी बंधनों से मुक्ति की इस इच्छा को रूपायित किया गया। मुक्ति की कामना और उसके लिए प्रयास वैसे तो इस युग के समस्त साहित्य में मिलते हैं लेकिन स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति का विशिष्ट और सघन रूप हमें छायावाद में मिलता है।

दलितों एवं पीडितों के प्रति सहानुभूति एवं संघर्ष चेतना

निराला की कथा में शूद्र और द्विज जातियों की सामाजिक परिस्थितियों पर जगह.जगह टिप्पणियाँ मिलती हैं। निराला ने ऊंच.नीच का भेद मिटाने के लिए निरंतर संघर्ष किया। निराला ने लिखा है. शूद्र या अछूत इस देश के उच्च वर्ग के लोगों के मन में सदियों से रहे हैं। निराला जी ने कभी भी अपनी जाति श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं किया। उनका झूठा धर्म हमेशा लाठी से खारिज किया गया है। गरीबों की आवाज सुनी। उनके लिए ताकतवर से लड़ना उनके साथ जुड़ना उनके सुख.दुःख में। यही कारण है कि इतनी बड़ी भगत.सभा सवर्णों की संख्या को पछाड़ते हुए इस जुलूस में बहुत आगे दिख रही थी। शिव जी अपने भूतों से ही सुशोभित हैं।

निराला को श्रद्धा से याद करने वालों में निम्न जाति के लोगों की संख्या अधिक थी और उच्च जाति के लोगों की संख्या बहुत कम थी। इससे पता चलता है कि निराला ने कुलीनता और अभिजात वर्ग के खिलाफ संघर्ष में क्या भूमिका निभाई! उन्होंने अपने गांव के चमारों और पासियों को समान दर्जा दिया और लड़ाई लड़ी ब्राह्मणों का अहंकार। उन्होंने यह भी दिखाया है कि गरीबों की जाति के साथ कोई सीधा संबंध नहीं है। बिलेसुर जाति ब्राह्मणों की थी लेकिन बहुत गरीब थे। उन्होंने बकरियां उठाईं और हार नहीं मानी उनकी गरीबी से निराला पीड़ितों के प्रबल समर्थक थे। जब तक देश में ऊंच.नीच का भाव रहेगा स्त्री.पुरुष का भेद रहेगा और अमीर.गरीब का भेद रहेगा तब तक भारत को वास्तविक स्वतंत्रता नहीं मिल सकती।

निराला के कथा साहित्य में नारी की राजनीतिक और आर्थिक चेतना

पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता महिलाओं के प्रति इतनी ऊँची और सहानुभूतिपूर्ण नहीं रही है जितनी दिखावा किया जाता है। आदरणीय नामों की चादर ओढ़ने की बजाय नारी को सम्मान की दृष्टि से देखना आवश्यक है। भारतीय नारी के संघर्ष और प्रगति का इतिहास कई मोड़ों से गुजरा है। सदियों से रूढिवादिता जर्जर परंपराओं और शोषण के चंगुल में जकड़ी महिलाओं ने थोड़ा सा समर्थन मिलने के बाद अपनी स्वतंत्रता और पहचान की रक्षा के लिए एक वास्तविक रास्ता खोजने के लिए निकल पड़े। आज महिलाएं पारंपरिक यातना और नई अवधारणाओं के सांझ में संघर्ष करते हुए अपने नए रूप को गढ़ने की कोशिश कर रही हैं।

समस्या का कथन

- **निराला ने जातीय गौरव –** बोध के लिये इस नीति का विरोध करते हुये लिखा कि "यदि दूसरे देश को अपना पूर्व गौरव पहचान कर अपना अस्तित्व बनाये रखना है, यदि इसे अन्य सभ्यताओं के मुकाबले

खड़े होकर अपना मस्तक नत नहीं करना है, और यदि राजनीतिक, आर्थिक आदि विषयों में विदेशियों का गुलाम नहीं होना है। सारांश यह कि इतिहास में कुछ अपना व्यक्तित्व बनाये रखना है, तो भारत को राष्ट्रीयता के एक पाश में अवश्य बँधना पड़ेगा। निराला की जातीय चेतना का केन्द्र बिन्दु भारतीय राष्ट्रीयता है । हिन्दी का जातीयता बोध इसी से जुड़ा हुआ हैं। इस बोध में भाषा की अहं भूमिका है। हमने जातीयता के स्वरूप की चर्चा करते समय कहा है कि जातीय बोध में भाषा की अहं भूमिका होती है। इस से यह स्पष्ट है कि निराला यह मानते थे कि अंग्रेज अपने राज्य विस्तार के लिये भारतीय राष्ट्रीयता को नष्ट करना चाहते थे।

उद्देश्य

- निराला साहित्य की पृष्ठभूमि का अध्ययन ।
- निराला के काव्य की अंतर्वस्तु का अध्ययन ।
- निराला की कविता में राष्ट्रीयता और नवजागरण के तत्त्वों को पहचान सकेंगे निराला के गद्य में नवजागरण के तत्त्वों का अध्ययन किया ।
- निराला के कथा.साहित्य में नारी की राजनीतिक और आर्थिक चेतना का अध्ययन ।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का कथा साहित्य

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के कथा साहित्य में उपन्यास और कहानी दोनों की गणना की जाती हैं। इनके उपन्यासों की कुल संख्या 10 है। जिनमें आठ उपन्यास तथा दो रेखाचित्र या संस्मरण हैं। उपन्यासों का नाम और प्रकाशन क्रमशः (1) अप्सरा (1931 ई.), (2) अलका (1933 ई.) (3) प्रभावती (1935 ई.), (4) निरुपमा (1936 ई.), (5) चमेली (अपूर्ण उपन्यास 1939 ई.) (6) इन्दुलेखा (1960 ई.) (अपूर्ण), (7) काले कारनामे (अपूर्ण 1950 ई.), (8) चोटी की पकड़ (1946–47 ई.) में हुआ। रेखाचित्र (1) कुल्लीभाट (1939 ई.), बिल्लेसुर बकरिहा (1941 ई.) कहानी संग्रह (1) लिली (1933 ई.), (2) सखी (1935 ई.), (3) सुकुल की बीबी (1941 ई.) (4) चतुरी चमार (1945 ई., (5) देवी (1948 ई.) इस प्रकार इनके कथा साहित्य का रचनाकाल 1929 ई. से 1960 ई. तक यह भारतीय इतिहास में मोटे तौर पर भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का काल है । राजनीतिक दृष्टि से यह काल उपनिवेशवाद के विरोध का काल है और सामाजिक दृष्टि से सामन्ती अवशेषों के विरोध का । इस काल में जातीय चेतना को खण्डित – विखण्डित करने वाली शक्तियों का विरोध भी दिखाई पड़ता है एवं सामाजिक जीवन में होने वाले प्रगतिशील तत्वों के ग्रहण का आह्वान भी । कुल मिलाकर यह युग जातीय अस्मिता के नवनिर्माण का है ।

निराला द्वारा जाति चेतना का चित्रण

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अध्याय में क्रमशः जातीयता के स्वरूप, हिन्दी उपन्यास की परम्परा और निराला का कथा साहित्य एवं निराला के चिन्तन के विविध आयामों का अध्ययन कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि निराला जी हिन्दी नवजागरण के संवाहक हैं। वे हिन्दी नवजागरण के जिस दौर में साहित्य रचना कर रहे थे उसका एक बड़ा भाग नवजागरण के सुधारवादी और अनुनय–विनय के दौर को पार कर भारतीय स्वाधीनता संग्राम के स्वायत्तता एवं समाज सुधार के परिवर्तनवादी युग में प्रवेश कर चुका था। अंग्रेज सरकार की सारी इनायतों को सहजते हुये भी भारतीय जनता 'स्वतंत्रता को जन्म सिद्ध अधिकार' मानने लगी थी । उसी प्रकार सामाजिक मुद्दों से परहेज करने वाले राष्ट्रीय नेताओं ने सामाजिक अन्याय को अपने एजेंडा में शामिल कर लिया था।

जबकि इसके पहले इसका विरोध कर रहे थे। इस प्रकार सामाजिक और राजनीतिक दोनों तरह की पराधीनता से मुक्ति हमारी जातीय चेतना का अंग बन गया था। यह चेतना साम्राज्यवाद एवं सामन्तवाद विरोधी चेतना के रूप में जानी जाती है। इन दिनों विश्व स्तर पर पूँजीवाद साम्राज्य प्रसारण की नियत से तमाम

अफ्रोएशियाई एवं अन्य देशों में अपने उपनिवेश का झंडा गाड़ चुका था तथा नये उपनिवेशों की तलाश में एक युद्ध के बाद दूसरे की तैयारी कर रहा था। इसके साथ साम्यवादी रूस मानव मुक्ति का नया विकल्प लेकर शोषणविहीन समाज व्यवस्था का सपना साकार कर रहा था। दुनिया के बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों का ध्यान इस ओर गया। इसके पहले हमने लिखा है कि किस प्रकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जवाहर लाल नेहरू और प्रेमचन्द इस विचारधारा से प्रभावित थे। जबकि अंग्रेज सरकार कोशिश कर रही थी कि भारत पर रूस की छाया न पड़े।

निराला की बहुआयामी जातीय पहचान

जिसमें राजनीतिक आकांक्षा अन्तर्निहित थी किन्तु अधिक बल सामाजिक संस्कार पर था। ब्रिटिश शासन व्यवस्था के विरुद्ध यह आन्दोलन 1857 में प्रथम स्वाधीनता संग्राम के रूप में प्रकट हुआ था। इसे राजनीतिक नवजागरण कहा जाता है। बीसवीं सदी में सांस्कृतिक और राजनीतिक नवजागरण की दोनों धारायें भारतीय स्वाधीनता संग्राम की मुख्य धारा में समाहित होगयी थीं। इन दोनों के मिश्रण से जिस चेतना का विकास हुआ वही निराला की जातीय चेतना है । इस चेतना को नवजागरणाकालीन राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना के प्रवाह रूप में देखा जा सकता है। अतएव राजनीतिक स्तर पर निराला ने विश्व एवं भारतीय साम्राज्यवाद का विरोध किया है एवं सामाजिक स्तर पर भारतीय समाज को सामन्ती जकड़बन्दी से मुक्त करने का आह्वान किया है। वे पुरातनता के निर्मोक से निकलना चाहते थे किन्तु पाश्चात्य आधुनिकता के पाश में फिर से बँधना उन्हें गँवारा नहीं था ।

निराला के उपन्यासों में जातीय चेतना

निराला की जातीय चेतना सामग्रिक रूप में साम्राज्यवाद और सामन्तवाद विरोधी चेतना है । जिसकी अन्तः प्रकृति स्वदेशी है । स्वदेशी का स्वरूप निराला के साहित्य में राष्ट्रीय, प्रान्तिक एवं अन्तःराष्ट्रीय तीनों रूपों में दिखायी पड़ता है। इस चेतना की अभिव्यक्ति कहीं– कहीं तो मुखर है, किन्तु कहीं–कहीं फल्गु की तरह अन्तःसलिला । जिसको जानने के लिये ऊपरी सतह को थोड़ा हटाना पड़ता है। उपन्यासों में यह दोनों रूपों में प्रकट है, कहीं स्पष्ट तो कहीं प्रच्छन्न। निराला ने छोटे–बड़े, आधे–अधूरे, कई उपन्यास लिखे हैं । 'निराला रचनावली' का सम्पादन करते हुये नन्दकिशोर 'नवल' ने लिखा है कि "निराला ने उपन्यास लेखन दो चरणों में किया है। पहले चरण में उन्होंने अप्सरा, अलका, प्रभावती और निरुपमा नामक उपन्यास लिखे और दूसरे चरण में कुल्लीभाँट, बिल्लेसुर बकरिहा, चोटी की पकड़ और काले कारनामें नामक उपन्यास ।

उपसंहार

इस शोध–प्रबन्ध में हमने हिन्दी भाषा–भाषियों की सामूहिक जाग्रत चेतना के लिये जातीय चेतना का व्यवहार किया है। सामान्य आवास भूमि, सामान्य संस्कृति, सामान्य भाषा, सामान्य ऐतिहासिक परम्परा और एक ही तरह से मनोवैज्ञानिक मनोभाव के आधार पर जातियों का निर्माण होता है। इसे आधुनिक पूँजीवाद की देन कहा जाता है । पूँजीवाद के अभ्युदय के पहले इसकी कल्पना नहीं की जा सकती । जाति की इस अवधारणा को विकसित करते हुए रामविलास शर्मा ने भारत में, विभिन्न जातियों को चिह्नित करते हुये अन्य भाषा भाषी जातियों के साथ हिन्दी जाति की अवधारणा को 'भाषा और समाज', 'निराला की साहित्य साधना', 'भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश', 'भारतीय साहित्य', 'हिन्दी जाति का साहित्य' जैसी पुस्तकों में प्रस्तुत किया है । और इसी जातीय चेतना के आधार पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर सुब्रह्मण्यम भारती और निराला की जातीय चेतना को चिह्नित किया है। सामान्य भौगोलिक इकाई, सामान्य ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रिक्थ तथा भाषा जैसे कारकों के आधार पर जातीय चेतना के विकास की जो बात हमने पहले कही है, वह प्रच्छन्न रूप में हर मानव समुदाय में पायी जाती है। लेकिन एक ऐतिहासिक काल खण्ड में इसका निर्माण होता है और वह काल खण्ड पूँजीवाद के उदय का काल है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य की भूमिका दृ हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 147 हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्रकाशन
2. अप्सरा (भूमिका) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रकाशन, 1931 निराला रचनावली भाग 3, 1998
3. अप्सरा (भूमिका), सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', प्रकाशन. 1931 निराला रचनावली भाग 3, 1998
4. निराला का कथा साहित्य, वस्तु और शिल्प, डॉ. उषा द्विवेदी, सं. 2004 कुमार सभा पुस्तकालय कलकत्ता
5. निराला का कथा साहित्य, वस्तु और शिल्प, डॉ. उषा द्विवेदी, सं. 2004 कुमार सभा पुस्तकालय कलकत्ता
6. निराला का कथा साहित्य, वस्तु और शिल्प, डॉ. उषा द्विवेदी, सं. 2004 कुमार सभा पुस्तकालय कलकत्ता
7. सेवासदन, प्रेमचन्द – वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. निराला की साहित्य साधना, रामविलास शर्मा, खण्ड 2, पृ. 462 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. प्रभावती, निराला रचनावली, नवल किशोर 'नवल', भाग 3, 1998 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. प्रभावती कृ निराला रचनावली भाग 3, सं. 1998 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. भूमिका कृ निराला रचनावली भाग 3, 1998, पृ. 465 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. निराला की साहित्य साधना – रामविलास शर्मा सं0 2005, पृष्ठ 465
13. निराला का कथा साहित्य, वस्तु और शिल्प, डॉ० ऊषा द्विवेदी पृ. 75 कुमार सभा पुस्तकालय कलकत्ता
14. निराला का कथा साहित्य, वस्तु और शिल्प, डॉ० उषा द्विवेदी पृ. 76 कुमार सभा – पुस्तकालय कलकत्ता
15. इग्नू पी. जी. एच. आई., चतुर्थ खण्ड 31, डॉ. निर्मल जैन, पृ. 11 राजर्षि टंडन मु०वि०वि० पाठ सामग्री

❖◆❖